भारत में याक की जनसंख्या नाम मात्र होने के बावजूद भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने सही समय पर उचित निर्णय लेते हुए याक के बहुमुखी विकास हेतु राष्ट्रीय याक अनुसंधान केन्द्र का निर्माण करवाया। यह दुनियॉ का इकलौता केन्द्र है जो मुख्य रुप से याक–पालन एवं उसके विकास के लिए अनुसंधान कर रहा है। आरंभ से ही यह संस्थान याक–प्रजनन, रोगों की रोकथाम, खाद्य स्त्रोतों को बढ़ावा देने, परंपरागत याक प्रबंधन में सुधार और परमाणु–आनुवांशिक विज्ञान आदि क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर अनुसंधान कर रहा है।

मुख्य उपलब्धियॉ

- याक की शरीर रचना संबधी एवं उत्पादक लक्षण के लिए अनुवांशिक विशेषीकरण, उत्पादन और प्रजनन लक्षण में उच्च अनुवांशिक परिवर्तनशीलता दर्शाता है।
- प्रारूपी विशेषताओं पर आधारित याक के पाँच प्रकार की पहचान की गई है।
- परिवार आधारित डी0 एन0 ए0 को अलग किया गया।
- याक के उत्पादकता प्रदर्शन में सुधार के लिए चयनात्मक प्रजनन अपनायी जा रहा है।
- गर्मियों के दौरान जब तापमान 10^0C तथा आर्द्रता 90% से अधिक होती है, याक गर्मी का तनाव अनुभव करते हैं।
- याक वीर्य का क्रायोप्रीजरवेशन विकसित किया गाया तथा इससे कृत्रिम गर्भाधान का सफलतापूर्वक अभ्यास किया गया।
- याक में भ्रूण प्रत्यारोपण मानकीकृत की गई और इस विधी से केन्द्र में दुनिया का पहला याक बछडे. का जन्म हुआ।
- सी0 एस0 डब्लू0 आर0 आई0 द्वारा विकसित प्रोजेस्टेरॉन पूरित योनिय स्पंज से मदकाल समन्वयन एवं तत्पश्चात कृत्रिम गर्भाधान के परिणाम स्वरूप 100% मद प्रतिक्रिया के साथ 80% गर्भाधान और 60% बच्चा पैदा करने की दर प्राप्त हुई।
- याक और याक–गाय के संकर भ्रूण की प्रयोगशलिय उत्पत्ति ब्लास्टोसिस्ट और कॉम्पैक्ट मौरूला स्तर तक की गई और इन्हे वीट्रीफिकेशन विधी द्वारा हिम संरक्षीत किया गया।
- याक आहार के लिए क्षेत्र प्रधान खनिज मिश्रण तैयार किया गया जिसमे जस्ता, ताम्र, सफेद धातु एवं अभ्रक को 40:20:2:1 के अनुपात मे मिलाया गया।
- बढ.ते हुए याकों को सूक्ष्म पोषक तत्वों से सीमित संपूर्ण आहार खण्डों को खिलाने से अधिकतम आर्थिक लाभ के साथ अधिकतम वृद्धि प्रदर्शन प्राप्त हुआ।
- विभिन्न घास को अरूणाचल प्रदेश और सिक्किम के उच्च ऊँचाई (9000 फीट समुद्रतल से उपर) के विभिन्न स्थानों पर लगाने का खोजपूर्ण परिक्षण किया गया।
- परजीवी रोगों पर महामारी विज्ञान के अध्ययन किए गए।
- कुछ सामान्यतः प्रयोग किए जाने वाले उत्तरी पूर्वी भारत के स्वदेशी पारंपरिक ज्ञान की पहचान की गई और उसे मानकीकृत करके दस्तावेज बनाए गए।

- याक बसे हुए राज्यों के याक चारवाहों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती का मूल्यांकन संभव देहाती समुदायों की वर्तमान आर्थिक सुधार के लिए किया गया।
- याक के ऊन में भेड. ऊन तथा अंगोरा खरगोश ऊन को क्रमशः 50%, 25% एवं 25% की मात्रा में मिश्रित कर विभिन्न मूल्यांकित उत्पादों अर्थात टोपी, डोर मैट, कालीन और दीवार के पर्दे इत्यादि तैयार किए गए।
- याक के दूध से कम वसा (1%) के साथ प्राकृतिक पोषक रेशों से भरपूर फंक्शनल पनीर तैयार किया गया है।
- इस संस्थान का एक कृषि विज्ञान केन्द्र अरूणाचल प्रदेश के लोहीत जिले के चोंखम में स्थित है जो कि 26 मार्च, 2007 से कार्यरत है।

परिचय

राष्ट्रीय याक अनुसंधान केन्द्र का अनुमोदन सन् 1985 ई. में 8वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत किया गया था। इस संस्थान की स्थापना सन् 1989 ई. में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अर्न्तगत अरुणाचल प्रदेश में हिमालय की गोद में बसी दिरॉग नामक स्थान में याक पाये जाने वाले दूर–दराज के क्षेत्रों में याक–पालन में सुधार लाने के उद्‌देश्य से की गई।

पिछले 22 वर्षों के दौरान इस केन्द्र को अनुसंधानीय कार्यो में भरपूर उपलब्धियॉ प्राप्त हुई है। यह केन्द्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों एवं पशु–स्वास्थ्य चिकित्सा संबंधित संस्थानों के साथ लगातार संपर्क में रहते हुए याक–पालन में सुधार हेतु भरसक प्रयास कर रहा है।

केन्द्र में कार्यालय व प्रयोगशाला भवन का निर्माण कार्य केन्द्रीय लोकनिर्माण विभाग के माध्यम से चल रहा है। केन्द्र के प्रयोगशालाओं में विभिन्न प्रकार के आधुनिक उपकरण लगाये गये हैं जिससे ये प्रयोगशाला देश की अच्छे प्रयोगशालाओं में से एक मानी जा सकती है।

31 मार्च 2010 तक केन्द्र में कुल 10 वैज्ञानिक, 07 तकनीकी, 07 प्रशासनिक एवं 13 सहायक कर्मचारी कार्यरत थे।

भौगोलिक स्थिति

राष्ट्रीय याक अनुसंधान केन्द्र का मुख्य कार्यालय दिरांग, अरुणाचल प्रदेश राज्य के पश्चिम कामेंग जिले में स्थित है जो समुद्रतल से लगभग 1500 मीटर की उॅचाई पर है। निकमाडुॅग याक फार्म जो दिरॉग से 31 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है उसकी उॅचाई समुद्रतल से लगभग 2750 मीटर है।

दिरांग से जिला मुख्यालय बोमडिला की दूरी लगभग 42 किलोमीटर, तेजपुर की दूरी लगभग 200 किलोमीटर एवं गुवाहाटी जो देश के हर क्षेत्रों से आवा–गमन से जुड़ा है उसकी दूरी लगभग 400 किलोमीटर के आसपास है। यहॉ का न्युनतम तापमान लगभग –1 डिग्री सेल्सियस एवं अधिकतम तापमान लगभग 33 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहता है।

लक्ष्य

- आनुवंशिक आवश्यकताओं का परीक्षण व अध्ययन करना, याक पालन एवं याक की जनन क्षमता को बढ़ाकर पुर्नरुत्पादन की मुश्किलों का सर्वेक्षण व नीदान करना।
- शुद्ध याक नस्ल के छोटे–छोटे पशु–समूह स्थापित करना और याक संबंधी प्रबंधों के अन्तर्गत अनुसंधान करना।
- विदेशी याक के वीर्य से संकरण–चयन पद्धति द्वारा दुग्ध रेशा एवं वहन क्षमता में सुधार करने हेतु अनुसंधान करना।
- अनुसंधान द्वारा याक को खुले बाड़ों एवं बंद बाड़ों में रखकर उसकी पोषण–कार्यिकी, उत्पादन व प्रबंध संबंधी तथ्यों पर नजर रखना व अनुसंधान करना।
- याक के लिए उॅचे स्थानों तथा मध्य उॅचाई वाले स्थानों पर चारा एवं चारागाहों के विकास कि लिए निरीक्षण करना व उसके विकास हेतु अनुसंधान करना।
- याक में फैलने वाली संक्रामक बीमारीयों पर अनुसंधान करके व्यवहारिक चिकित्सा संबंधी निष्कर्षों के माध्यम से याक पाये जाने वाले क्षेत्रों में चिकित्सा प्रदान करना व रोंगों का निदान करना इत्यादि।

संगठनात्मक प्रारुप

केन्द्र की संगठनात्मक संरचना, प्रशासनिक तरीके से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधारगत ढॉचे पर किया गया है। केन्द्र के निदेशक के देख–रेख व निर्देशन में केन्द्र के वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारी अपना कार्य सम्पन्न करते हैं। केन्द्र के विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनुसंधान कार्यों को भिन्न–भिन्न इकाइयों में वर्गीकृत किया गया है जिसमें पोषण इकाई, प्रजनन इकाई, स्वास्थ्य–इकाई, विस्तार–इकाई, शरीर–क्रिया इकाई, उत्पति–इकाई, पशु पालन–इकाई एवं उत्पाद–इकाई आदि प्रमुख हैं।

इसके साथ ही केन्द्रीय प्रयोगशाला, एरिस–सेल, पुस्तकालय, फार्म तथा केन्द्र को सुचारु रुप से चलाने के लिए प्रशासनिक–इकाई, वित्त एवं लेखा–इकाई, तकनीकी–इकाई, वाहन–इकाई, सुरक्षा–इकाई एवं भण्डार–इकाई भी शामिल है।

राजभाषा अनुभाग

हर वर्ष की भॉति इस वर्ष भी राष्ट्रीय याक अनुसंधान केन्द्र, दिरांग में दिनांक 01 से 30 सितम्बर 2010 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। इसी के दरम्यान दिनांक 14 सितम्बर 2010 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन भी किया गया, जिसमें केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, प्रशासनिक अधिकारियों के साथ–साथ समस्त कर्मचारियों ने भी गर्मजोशी से भाग लिया।

बजट

वित्तिय वर्ष 2010–11 के दौरान राष्ट्रीय याक अनुसंधान केन्द्र के अन्तर्गत योजना मद में 425.00 लाख एवं गैर–योजना मद में 198.32 लाख रुपये की धनराशि खर्च की गई।

नये सदस्य

- श्री एस. सी. शित, दिनांक 21/09/2010 को सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रुप में कार्यभार सम्भाला।
- श्री खोकन पॉल, दिनांक 14/03/2011 को निजी सचिव के रुप में कार्यभार सम्भाला।

स्थानांतरण

- डा. जयाकुमार एस., वैज्ञानिक का स्थानान्तरण दिनांक 22/05/2010 को एन. बी. ए. जी. आर. में हुआ।
- डा. कन्डीपन जी., वैज्ञानिक का स्थानान्तरण दिनांक 04/12/2010 को आई. वी. आर. आई. , इज्जतनगर में हुआ।
- श्री एस. सी. शित, सहायक प्रशासनिक अधिकारी का स्थानान्तरण 04/04/2011 को सी. टी. आर. आई., राजमुद्री में हुआ।